Traditional Approach 1 : Comparative Politics

Dr. Akhlakh Ahmad Dept. of Pol. Sc.
D.K. College

राजनीति विज्ञान में राजनीतिक संस्थाओं, संविधानों व सरकारों के तुलनात्मक अध्ययन का अत्यधिक लम्बा व गौरवमय अतीत है। राजनीतिक संस्थाओं व सरकारों के अध्ययन के प्रारंभिक प्रयासों को तथा उसके बाद के कुछ अध्ययनों को परंपरागत तुलनात्मक राजनीति का नाम दिया जाता है। तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के कई उपागम हैं। व्यापक अर्थों में इनका वर्गीकरण दो श्रेणियों में हो सकता है — पारंपरिक और आधुनिक।

पारंपरिक उपागम विचारात्मक और मूल्यात्मक प्रकृति के होते हैं। ये उपागम संस्थागत, मूल्य प्रधान, व्यक्तिपरक, असत्यापनीय व चिंतनात्मक ही रहे, जबकि आधुनिक उपागम आनुभविक और वैज्ञानिक हैं। सारांशतः पारंपरिक उपागमों में सम्मिलित हैं : (i) दार्शनिक, (ii) ऐतिहासिक, (iii) कानूनी या वैधिक, और (iv) संस्थागत उपागम।

आधुनिक उपागमों के अंतर्गत हैं : (i) व्यवहारवादी उपागम, और (ii) व्यवस्था उपागम। व्यवस्था उपागम के अंतर्गत शामिल हैं — निवेश-निर्गत एवं संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम।

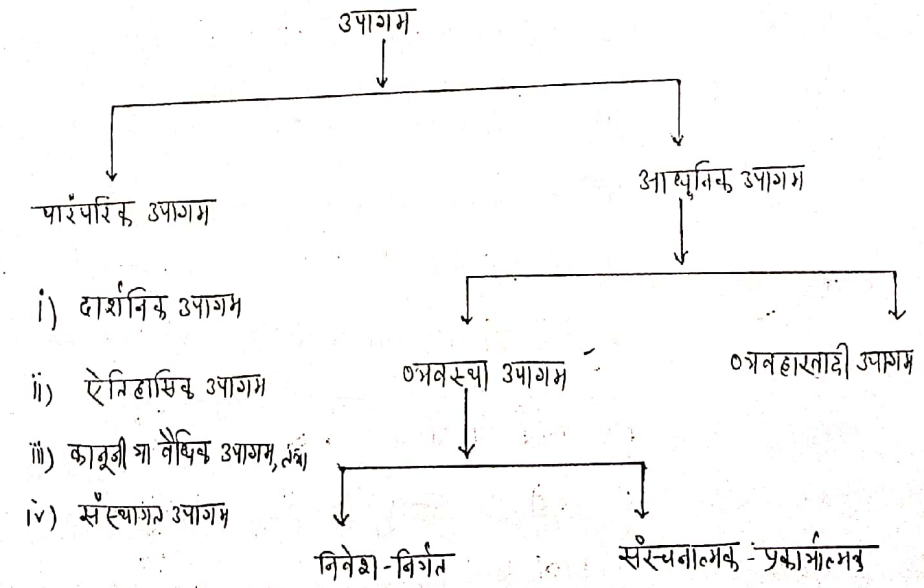

जिन विद्वानों के राजनीतिक अध्ययनों को परम्परागत परिप्रेक्ष्य से संबंधित किया जाता है जैसे — बार्कर, लास्की, कार्ल जे० फ्रेडरिक, हरमन फाइनर

Scanned with CamScanner

प्रमुख हैं। इनके अलावा ऑग व जिंक तथा गुनरो के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन लेखकों ने तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग कर यूरोप की संवैधानिक संस्थाओं की तुलनात्मक व्याख्या की। परंतु मुख्य रूप से यह अध्ययन अपने ढंग में विवरणात्मक ही रहे हैं। इन्होंने अपनी तुलनाओं का उद्देश्य समस्या समाधानात्मक, व्याख्यात्मक अथवा विश्लेषणात्मक नहीं बनाया। परम्परागत तुलनात्मक ~~अध्ययन~~ उपागम राजनीतिक अध्ययन मुख्यतः पाश्चात्य राजनीतिक व्यवस्थाओं के अध्ययन तक ही सीमित थे। इस सीमित क्षेत्र में भी मुख्यतः प्रतिनिध्यात्मक प्रजातंत्र का ही अध्ययन किया गया। और अलोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को प्रजातांत्रिक आदर्शों से पथभ्रष्ट या विचलित कहकर उन्हें अपने अध्ययन क्षेत्र से अलग रखा गया।

ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach) :-

इस उपागम के अंतर्गत भिन्न-भिन्न राज्यों की शासन-प्रणालियों के ऐतिहासिक विवरण तैयार करके उनकी तुलना करते हैं, और यह पता लगाते हैं कि हमें अपने वर्तमान लक्ष्यों की सिद्धि के लिए और संभावित त्रुटियों के निवारण के लिए कौन-कौन से उपाय करने चाहिए? ऐतिहासिक उपागम के संस्थापकों में इतालवी विचारक निकोलो मैकियावेली, ~~फ्रांसीसी~~ फ्रांसीसी दार्शनिकों - चार्ली द मांतेस्क्यू तथा अलेक्सी द ताकवील, और अंग्रेज विचारकों - वाल्टर बेजहॉट तथा हेनरी सम्नर मेन के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। इन विचारकों ने तुलनात्मक राजनीति-विश्लेषण के ऐतिहासिक उपागम को अपनाकर जो निष्कर्ष निकाले, वे राजनीति-सिद्धान्त की मुख्य धारा का अंग बन गए हैं।

यह बात महत्वपूर्ण है कि ऐतिहासिक उपागम के अंतर्गत तथ्यों का अन्वेषण और प्रयोग किया जाता है। इसमें यह कमी हो सकती है कि हम पूरे तथ्य एकत्र न कर पाएँ, या सीमित ~~काल या क्षेत्र~~ क्षेत्र या काल से जुड़े हुए तथ्यों के आधार पर कोई निष्कर्ष निकालने की कोशिश करें जो पूरी तरह सही न हो। यदि इन कमियों को दूर कर दिया जाए तो ऐतिहासिक उपागम तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

Scanned with CamScanner

ऐतिहासिक सामग्री का संकलन करते समय हमारा ध्यान केवल शासक वर्ग की गतिविधियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति, सांस्कृतिक चेतना के स्तर, जन साधारण की भावनाओं और आन्दोलनों के बारे में भी पूरा विवरण अवश्य तैयार करना चाहिए।

देखा जाए तो ऐतिहासिक उपागम तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में आधुनिक उपागम के लिए महत्वपूर्ण पूरक भूमिका निभा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि हम भारत, ब्रिटेन, अमरीका, रूस या चीन की वर्तमान राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं, तो इन देशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान जरूरी होगा।

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम के अनेक समर्थक किसी देश की राजनीति के विश्लेषण के लिए वहाँ की राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन आवश्यक समझते हैं। राजनीतिक संस्कृति के अंतर्गत उस देश में प्रचलित ऐसे मूल्यों, मान्यताओं और मानकों का अध्ययन किया जाता है, जो शासक वर्ग, शासन-प्रणाली और शासन-प्रक्रिया को वैधता प्रदान करते हैं। जाहिर है किसी देश की राजनीतिक संस्कृति की जानकारी के लिए उसके इतिहास के पन्ने पलटना जरूरी होगा। उदाहरण के लिए, भारतीय इतिहास की जानकारी के बिना भारत की राजनीतिक संस्कृति के बारे में कोई राय बनाना व्यर्थ होगा। इसी तरह, भारत की राजनीतिक संस्थाओं और राजनीतिक दलों के व्यवहार को समझने के लिए इनके ऐतिहासिक विकास की जानकारी लाभदायक होगी।

कानूनी या वैधिक उपागम :— इस उपागम के अंतर्गत भिन्न-भिन्न देशों में प्रचलित संविधानों के आधार पर वहाँ की शासन-प्रणालियों के संगठनात्मक ढाँचों, शासन के अंगों की कानूनी शक्तियों और उनके परस्पर सम्बंधों का विश्लेषण किया जाता है, और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ संगठनात्मक सुधार (Organizational Reforms) के उपायों पर विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश शासन प्रणाली के अंतर्गत लार्ड सभा के पुनर्गठन के प्रस्ताव इस उपागम की देन हैं। इस उपागम के प्रवर्तकों में

वुडरो विल्सन, डायसी, जेम्स ब्राइस, के० सी० व्हीयर, हर्मन फाइनर, कार्ल फ्रेडरिक आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

आज के व्यवहारवादी राजनीति वैज्ञानिक कानूनी-औपचारिक उपागम के विरुद्ध यह तर्क देते हैं कि शासन के बाहरी ढाँचे या कानून से संबंधित अंगों के अध्ययन से किसी देश की यथार्थ राजनीति को सही-सही समझना मुश्किल है। परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी देश का संविधान वहाँ की राजनीति के लिए वैध ढाँचा प्रस्तुत करता है। संविधानों के निर्माण, संशोधन और व्याख्या के क्षेत्र में कानूनी-औपचारिक उपागम की देन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। नवोदित राष्ट्रों की राजनीति को नियमित करने के लिए तो यह और भी महत्वपूर्ण है।

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का कानूनी उपागम अपने आप में अधूरा तो है, परंतु उसे इसके अध्ययन क्षेत्र से निकाल देना संगत नहीं होगा। किसी देश का सांविधानिक कानून वहाँ की आंतरिक राजनीति के लिए आवश्यक मानदंड निर्धारित करता है और अंतर्राष्ट्रीय कानून अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में यही भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, भारतीय राजनीति के अध्ययन में भारत के संविधान की जानकारी जरूरी समझी जाती है, और संविधान की व्याख्या करते समय न्यायालयों द्वारा कानूनी दृष्टिकोण को प्रमुखता दी जाती है। राज्य के विभिन्न अंगों विधानमण्डल, कार्यपालिका और न्यायपालिका की अपनी-अपनी शक्तियाँ और उनके परस्पर सम्बंध, मूल अधिकारों, और राज्य नीति के निदेशक सिद्धान्तों की आपेक्षिक स्थिति, इत्यादि से सम्बंधित प्रश्न कानून की परिधि में आते हैं, और उनका विवेचन राजनीति के अध्ययन में सहायता देता है।

संस्थागत उपागम (Institutional Approach) :— राजनीति के अध्ययन की संस्थात्मक पद्धति इसकी कानूनी पद्धति के साथ निकट से जुड़ी हुई है। जिसे आज भी विस्तृत रूप से अपनाया जाता है। इसके अंतर्गत राज्य की विभिन्न संस्थाओं - जैसे कि विधानमण्डल, कार्यपालिका, न्यायपालिका

Scanned with CamScanner